321hi26

26

वस्त्रों एवं कपड़ों का चुनाव

पिछले चार पाठों मे आपने वस्त्रों के विषय मे काफी पढ़ा। आप तन्तु और उनके गुणों, वस्त्र बनाने की विधियों और वस्त्रों पर की गयी भिन्न–भिन्न वस्त्र परिसज्जाओं के विषय में भी जानते हैं। यह परिसज्जा वस्त्र को एक विशिष्टता प्रदान करती है जिसकी मदद से हम वस्त्र को पहचानने में सक्षम होते हैं। वस्त्र की गुणवत्ता के कौन से दूसरे ऐसे संकेतक है जो आपकी मदद कर सकते हैं? इसी प्रकार कुछ लोग केवल सूती वस्त्र पहनते हैं क्योंकि मिश्रित वस्त्र उन्हें रूचिकर नहीं लगते। अतः उस स्थिति में आप कैसे आश्वस्त होंगे कि जो कुछ भी आप खरीद रहे हैं, वह आपकी आवश्यकता के अनुसार है? कई बार वस्त्र के गुण तन्तुओं पर निर्भर करते हैं, अतः हम सबके लिये यह आवश्यक हो जाता है कि हम सही खरीददारी करने के लिये, वस्त्र के थान पर छपी हुई सूचना अवश्य पढ़ें।

यह तो वस्त्र के विषय में हुआ, परंतु यदि आप रेडीमेड कपड़े खरीदते हैं, तक क्या होता है? प्रत्येक रेडीमेड परिधान पर एक लेबल लगा होता है जो वस्त्र के विषय में आवश्यक सूचना देता है, परंतु हममें से अधिकतर लोग इन सूचनाओं पर ध्यान नहीं देते। आइये, इन सूचनाओं को विस्तार से जानें और वस्त्रों के चयन से संबधित कुछ समस्याओं को समझें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित कर सकेंगे–

- वस्त्रों के गुणों के आधार पर भिन्न–भिन्न उपयोगों के लिये वस्त्र का चुनाव;
- वस्त्रों के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या;
- गुणवत्ता संकेतक के रूप में लेबल का महत्त्व बताना;
- वस्त्र और परिधानों के व्यापार में की जाने वाली धांधलियों का उल्लेख;
- वस्त्र और तैयार परिधानों के चयन में याद रखे जाने वाले बिंदुओं का सूचीकरण।

26.1 विभिन्न उपयोगों के लिये वस्त्रों का चुनाव

जब आप अपने घर के चारों ओर देखते हैं तब आपको पता चलता है कि अलग–अलग चीजों के लिये अलग–अलग वस्त्र उपयोग किये जाते हैं। जैसे पर्दों के लिये प्रयोग किये जाने वाले वस्त्र, परिधान या अंतर्वस्त्रों के लिये प्रयोग किये जाने वाले वस्त्रों से भिन्न हैं। आप देखेंगे कि एक विशेष परिधान के लिये विशिष्ट वस्त्र ही उपयोग किया जाता है। वस्त्रों में भिन्नता वस्त्रों के भिन्न गुणों के कारण होती है, जो जैसा कि आप जानते ही हैं कि तन्तुओं, सूत व वस्त्र निर्माण की तकनीकों, और वस्त्रों को दी गयी भिन्न परिसज्जाओं के कारण भी होती है। आप गर्मियों के लिये सूती वस्त्र ही क्यों खरीदते हैं, सिंथेटिक वस्त्र क्यों नहीं?

(1) तन्तुओं के गुण

पिछले पाठ में आप तन्तुओं के गुणों के विषय में पढ़ ही चुके हैं। क्या आपको याद है वे कौन से गुण हैं?

1. तन्तु की लम्बाई व दिखावट
2. नमी अवशोषण
3. ताप चालकता
4. दृढ़ता

आइये देखें, ये गुण किस प्रकार हमारे वस्त्रों व परिधानों के चयन को प्रभावित करते हैं।

(i) **तन्तु की लम्बाई व दिखावट**– क्या आप लघु तन्तुओं व दीर्घाकार तन्तुओं से बने वस्त्रों को याद कर सकते हैं? हाँ आप ठीक बता रहे हैं। ये क्रमशः सूती, जूट, ऊनी व नायलॉन और पॉलिएस्टर के वस्त्र हैं।

तन्तुओं की लम्बाई किस प्रकार हमारे चयन को प्रभावित करती है? आप जानते हैं कि लघु तन्तुओं से बने वस्त्र खुरदुरे दिखते हैं और दीर्घाकार तन्तुओं से बने वस्त्र मुलायम व चमकदार दिखते हैं। इसके अलावा सूती व ऊन के छोटे लहरदार तन्तु शीघ्र ही मैले हो जाते हैं। जबकि सिंथेटिक और रेशम के लम्बे तन्तुओं से बने वस्त्र जल्दी ही मैले नहीं होते और इनकी धुलाई करना भी सरल होता है।

इस प्रकार जब भी आपको कोई चमकीला व मुलायम वस्त्र चाहिये तो आप सिंथेटिक या रेशमी वस्त्र का चुनाव करें जो दीर्घाकार तन्तुओं से बने होते हैं।

आजकल, खुरदुरे व निष्प्रभ वस्त्रों पर ऐसी परिसज्जा की जाती है जिससे वस्त्र मुलायम व चमकदार दिखते हैं उदाहरण के लिये कलफ किये गये सूती वस्त्र

टिप्पणी

चमकदार दिखते हैं। लेकिन आप यह भी जानते हैं कि कलफ एक परिसज्जा है, जो धुलाई के बाद निकल जाती है।

(ii) **नमी अवशोषण** – क्या आप तन्तुओं के उस गुण से परिचित हैं जो वस्त्र को या तो अवशोषक या कम अवशोषक बनाता है। सूती नमी को अधिक अवशोषित करता है। जबकि सिंथेटिक तन्तु नमी को कम अवशोषित करते हैं। जब मौसम गर्म व आर्द्र रहता है तब हम सूती कपड़े अधिक पसंद करते हैं क्योंकि वे पसीने को सोखकर हमारी त्वचा को ठंडा बनाये रखते हैं। और चूंकि सिंथेटिक वस्त्र पसीने को नहीं सोखते वे गर्मियों के मौसम में आरामदायक नहीं होते। इसी प्रकार अधोवस्त्र और मोजों का चुनाव करते वक्त भी नमी अवशोषण का गुण ध्यान में अवश्य रखना चाहिये, क्योंकि शरीर के इन हिस्सों को अत्याधिक आराम की आवश्यकता होती है।

(iii) **ताप चालकता** – तन्तुओं के इस गुण का अर्थ है शरीर की उष्मा को शरीर से बाहर ले जाना। याद कीजिये कि सूत व रेयॉन उष्मा के सुचालक हैं और ऊन कुचालक है। अतः ऊनी वस्त्र शरीर को गर्म रखते है। वस्त्रों के इस गुण को सर्दियों के वस्त्रों का चयन करते वक्त याद रखिये। संभवतः आप गर्मियों के लिये सूती वस्त्र और सर्दियों के लिये रेशमी व ऊनी वस्त्रों का चुनाव करके ऐसा कर भी रहे हों।

(iv) **दृढ़ता**–वस्त्रों की दृढ़ता के गुण की आवश्यकता वस्त्रों की धुलाई में होती है। वस्त्रों को धोने में आसानी, वस्त्र की भीगी अवस्था में दृढ़ता पर निर्भर करती है। आप जानते ही हैं कि कुछ तन्तु भीगे होने पर कमज़ोर हो जाते हैं। ऐसे कौन से तन्तु हैं? हाँ ये ऊनी, रेशमी व रेयॉन आदि के तन्तु हैं। सूती व सिंथेटिक कपड़े अत्यधिक मज़बूत होते हैं अतः आसानी से धोये जा सकते हैं। अतः रोज़मर्रा के कपड़े जिनको बार–बार धोया व पहना जाता है, सूती या सिंथेटिक वस्त्रों से बने होने चाहिए। रेशम जैसे नाजुक कपड़े किन्हीं विशेष अवसरों पर ही पहनने चाहिए। नायलॉन, सबसे अधिक मज़बूत वस्त्र होने के कारण औद्योगिक उपयोग, पैराशूट व रस्सियों के लिये प्रयोग किया जाता है।

(2) वस्त्र निर्माण की तकनीकें

पिछले पाठों में आपने वस्त्र निर्माण की कई विधियों के विषय में पढ़ा। प्रत्येक विधि जैसा कि आप जानते ही हैं, वस्त्र को एक विशिष्ट गुण प्रदान करती है। उदाहरण के लिये बुने हुये वस्त्र लचीले व खिंचावदार होते हैं। अतः अधोवस्त्रों, मोजों व ऊनी स्वेटरों के लिये उपयुक्त होते हैं। वीविंग या बुनाई से मुलायम व दृढ़ वस्त्र प्राप्त होते हैं। अतः उनका चुनाव परिधान के अनुसार किया जा सकता है।

(3) परिसज्जा

आप कई प्रकार की परिसज्जा जैसे मर्सराइजेशन, सिकुड़न नियन्त्रण, जलरोधी परिसज्जा आदि के विषय में पढ़ चुके हैं, जो वस्त्रों पर उनकी बाह्य बनावट व

उपयोगिता को बढ़ाने के लिये दी जाती है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या परिसज्जा हमारे चुनाव को प्रभावित करती है? हाँ, परिसज्जा हमारे वस्त्रों के चयन को अवश्य प्रभावित करती है।

मान लीजिये आप सलवार सूट के लिये वस्त्र खरीदने के लिये बाज़ार जाते हैं, आप को पता है कि सामान्यतः आपको 4½ मीटर वस्त्र की आवश्यकता होगी। आपको इसके अतिरिक्त भी थोड़ा कपड़ा खरीदना पड़ेगा क्योंकि वस्त्र धुलाई के बाद सिकुड़ भी सकता है। परंतु यदि उस वस्त्र पर सिकुड़न नियन्त्रण परिसज्जा दी गई हो तो आपको कपड़े के सिकुड़ने की चिंता नहीं करनी होगी। इसी भांति यदि आपको अपने छाते का कपड़ा बदलना हो तो इसके लिये आप कोई भी कपड़ा बाज़ार से नहीं खरीदेंगे। आप जल प्रतिरोधी कपड़े के विषय में दुकानदार से पूछेंगे। आपको याद होगा कि परिसज्जा, वस्त्र के रूप रंग में बढोत्तरी के लिये दी जाती है। लेकिन कई बार एक सस्ते कपड़े को अत्यधिक कलफ करके उसके दोष को छिपा कर उसे सुन्दर बना दिया जाता है। आप अत्यधिक कलफ किये गये वस्त्र को कैसे पहचानेंगे? इसके लिये वस्त्र को एक कोना लेकर उसे अपने हाथों से रगड़ें। यदि कपड़े से सफेद पाउडर झड़ता है तो इसे मत खरीदें।

अतः वस्त्र खरीदते समय याद रखें कि चमक व कपड़े की सुंदरता से वस्त्र की गुणवत्ता नहीं बढ़ती। सावधानीपूर्वक देखें कि आखिर वस्त्र किस प्रयोग के लिये खरीदा जा रहा है। इस प्रकार वस्त्र के गुणों का ज्ञान आपको सही निर्णय लेने में सहायता करेगा।

पाठगत प्रश्न 26.1

1. नीचे दिये गये चार वाक्यों में से सही विकल्प चुनिये और चुने हुये विकल्प से वाक्य को पूरा करें।

   (i) लघु तन्तुओं से बने वस्त्र .... दिखते हैं।

   (a) खुरदुरे

   (b) मुलायम

   (c) चमकीले

   (d) चमकदार

   (ii) दीर्घाकार तन्तुओं से बने वस्त्र .... दिखते हैं।

   (a) मैले

   (b) मुलायम

   (c) खुरदुरे

   (d) निष्प्रभ

टिप्पणी

(iii) ....वस्त्र जल्दी मैले नहीं होते।

(a) सूती

(b) ऑरगॅन्डी

(c) डैनिम

(d) रेशमी

(iv) बच्चों के कपड़ों के लिये सबसे उपयुक्त .... वस्त्र है।

(a) रेशमी

(b) सूती

(c) नाइलॉन

(d) डैनिम

(v) .... ताप का कुचालक है।

(a) ऊन

(b) रेशम

(c) सूती

(d) डैनिम

2. प्रत्येक वक्तव्य के साथ दिये हुये विकल्प में से एक चुन कर रिक्त स्थान में भरिये व अपने चुनाव का कारण भी लिखिये।

(1) .... वस्त्रों की धुलाई करते समय उन्हें अच्छी तरह से रगड़ा जा सकता है। (सूती/रेयॉन)।

....

....

(2) ....वस्त्र औद्योगिक कार्यों के लिये प्रयोग किये जा सकते हैं। (सूती/नायलॉन)।

....

....

(3) ....वस्त्र आपको सर्दियों में गर्म रखते हैं। (ऊनी/पॉलिएस्टर)।

....

....

3. बुने हुये (निटेड) वस्त्रों के लिये निम्न वक्तव्यों में से सही पर (√) निशान लगायें।
   (i) धागे के फंदों से बनाये जाते हैं।
   (ii) खुरदुरे दिखते हैं।
   (iii) मुलायम दिखते हैं।
   (iv) नमी के अवशोषक होते हैं।
   (v) खिंचावदार होते हैं।

26.2 कपड़ों के चुनाव को प्रभावित करने वाले कारक

जिन वस्त्रों को चुनकर आप पहनने के लिये खरीदते हैं उन के चुनाव को मौसम, आयु, अवसर (जिन पर कपड़े पहने जाने हों), व्यवसाय व आपका पेशा, आदि कारक प्रभावित करते हैं।

(1) मौसम

आप गर्मियों में सूती व सर्दियों में ऊनी वस्त्र पहनते हैं। जैसा कि आप जानते ही हैं कि ऊनी वस्त्र कीमती होते हैं और उनके रखरखाव के लिये उचित देखभाल व सावधानी की आवश्यकता होती है। ठंडे स्थानों में रहने वाले लोग स्वंय को गर्म रखने के लिये ऊनी वस्त्र पहनते हैं। जबकि अत्यधिक गर्म स्थानों जैसे रेगिस्तान में रहने वाले लोग अपने सिर को ठंडा रखने के लिये पगड़ी पहनते हैं। स्वयं को ठंडा रखने के लिये वे लम्बे चोगे भी पहनते हैं।

चित्र 26.1: मौसम का प्रभाव

(2) अवसर

जब आप किसी विवाह समारोह में जाते हैं तब आप चटकीले रंग का लहंगा व चोली, घाघरा, शरारा, पैंट-कोट, आदि पहनते हैं। इनके साथ पहनी जाने वाली अन्य चीजें जैसे चूड़ियां, मालाएं और कान के बुंदे आदि भी चटकीले रंगों के ही होते हैं।

चित्र 26.2 अवसर

क्या आप इन चटकीले वस्त्रों को रोज़मर्रा के जीवन में पहन पायेंगे? रोज पहनने के लिये आप ऐसे वस्त्र पहनना चाहेंगे जो आरामदायक होने के साथ आपको फिट भी हों। इसी तरह के वस्त्र जिनके साथ कम से कम गहने या अन्य उपसाधन पहने जा सकें, जैसे

टिप्पणी

सलवार कमीज आदि किसी इंटरव्यू आदि के लिये पहने जा सकते हैं। इंटरव्यू के लिये साड़ी, औपचारिक सलवार कमीज व पतलून, कमीज और टाई का चुनाव आपको आत्मविश्वास से भर देंगे।

(3) आयु

आपने गौर किया होगा कि बढ़ती आयु के साथ पहने जाने वाले कपड़ों में भी परिवर्तन आता है। एक प्रौढ़ स्त्री द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र, कॉलेज जाने वाली छात्रा के वस्त्रों से एकदम अलग होते हैं। इसी प्रकार प्रौढ़ पुरूष भी फैशनेबल वस्त्रों की अपेक्षा सादे व आरामदायक वस्त्र पहनते हैं। आइये देखें किस प्रकार से आयु के साथ, पहने जाने वाले वस्त्र भी बदल जाते हैं।

चित्र 26.3 आयु

शिशुओं के कपड़े—जन्म से 12 महीने की आयु तक कपड़ों की आवश्यकता कम ही होती है। नवज़ात शिशु की मुख्य आवश्यकताएं गर्माहट, आराम व स्वच्छता हैं। नवजात शिशुओं के वस्त्र हल्के व मुलायम होने चाहिये क्योंकि बच्चों की त्वचा कोमल व नाजुक होती है। चूँकि नन्हें बच्चे अधिकतर समय सोते ही रहते हैं अतः उनके वस्त्र ऐसे होने चाहिये कि उन्हें आसानी से पहनाया व उतारा जा सके। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि बच्चों के कपड़ों की देखरेख भी आसानी से हो सके। सूती कमीजें जो पहनने में सरल हों या जिनके बटन या फीते सामने हों, ऐसे वस्त्र बच्चों के लिये उपयुक्त होते हैं। बच्चों की लंगोटियां या डायपर नमी सोखने वाले मुलायम सूती वस्त्र से बनी होनी चाहिये।

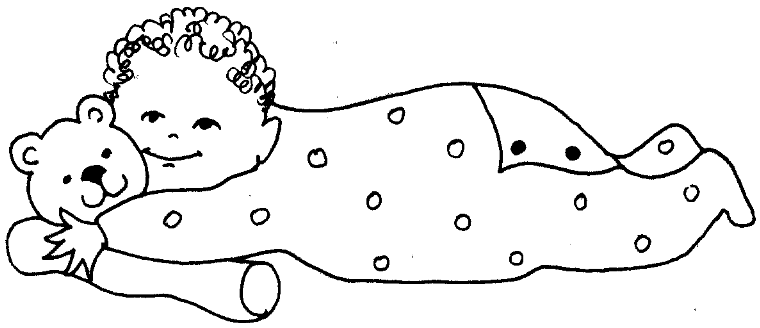

चित्र 26.4 शिशुओं के कपड़े

स्कूली बच्चों के कपड़े – इस आयु के बच्चे विकास की अवस्था में होते हैं। वे दौड़ना व खेलना पसंद करते हैं एवं बहुत ही फुर्तीले होते हैं। अतः उनके कपड़े मज़बूत व टिकाऊ वस्त्र से बने होने चाहिये ताकि वे जल्दी से फटें नहीं। सिलाई करते समय भी देखें कि सीवन में काफी कपड़ा दबा हो ताकि तेजी से बढ़ते बच्चों की आवश्यकतानुसार कपड़ा खोलकर बड़ा किया जा सके। चूँकि बच्चों के वस्त्र जल्दी मैले हो जाते हैं अतः उनके कपड़े धोने में भी आसान होने चाहिये।

कॉलेज के छात्रों के कपड़े – यह ऐसी आयु है जब बच्चे बड़े हो जाते हैं और कॉलेज जाना प्रारंभ करते हैं। यह आयु वर्ग अपने कपड़ों के विषय में काफी सचेत रहता है और नित नये तरह के कपड़े पहनना पसंद करता है। वे अपने कपड़ों में विविधता भी चाहते हैं क्योंकि वे एक ही पोषाक को रोज पहनना पसंद नहीं करते। इस उम्र के लड़के–लड़कियों को कपड़ों की फिटिंग व स्टाइल अधिक महत्वपूर्ण लगती हैं। कपड़ों की बनावट की बारीकियों पर वे अधिक ध्यान नहीं देते। अतः उनके लिये ऐसे कपड़े लिये जाने चाहिये जिन्हें वे मिक्स एंड मैच करके पहन सकें ताकि कम कपड़ों से ही उन्हें अधिक विविधता मिल सकें। उदाहरण के लिये कुछ कमीज़ों के रंग ऐसे होने चाहिये जो सभी सलवार या पायज़ामों के साथ मेल खा सकें। इसी प्रकार एक किशोर अपनी कपड़ों की अल्मारी में कुछ ऐसी जींस व टी–शर्ट रख सकता है जिनकी अदला–बदली करके वह अपने कपड़ों में विविधता ला सके।

चित्र 26.5 कॉलेज के छात्रों के कपड़े

चित्र 26.6 प्रौढ़ों के कपड़े

प्रौढ़ावस्था – प्रौढ़ों के लिये कपड़ों का चुनाव काफी हद तक उनके व्यवसाय पर निर्भर करता है। एक कामकाज़ी महिला को ऐसे कपड़े चाहिये जो धुलाई में भी आसान हों और जिन्हें कम से कम इस्त्री की आवश्यकता हो, क्योंकि उसके पास सीमित समय होता है। वह ऐसे कपड़ों को भी पसंद करेगी जो सिलवट रहित हों क्योंकि उसे दिन के अंत तक तरोताज़ा दिखना है। क्या आपको याद है कौन से कपड़ों में आसानी से सिलवटें नहीं पड़तीं?

वृद्धावस्था – वृद्धावस्था अपने साथ कई समस्यायें लाती है। इस आयु में शरीर अकड़ जाता है। आँखों की दृष्टि धुंधली हो जाती है और उर्जा का स्तर भी काफी हद तक कम हो जाता है। आपने अवश्य देखा होगा कि सामान्यतः वृद्ध लोग हल्के कपड़े पहनते हैं। अतः उनके पहनने के कपड़े ढीले–ढाले व आरामदायक होने चाहिये, न कि आधुनिक फैशन वाले। इसके अतिरिक्त उनके वस्त्रों में सामने की ओर बटन होने चाहिये तथा बटन व काज भी काफी बड़े होने चाहिये ताकि वृद्ध व्यक्ति उन्हें अच्छी तरह से देखकर लगा सकें।

(4) व्यवसाय

आपने डॉक्टरों व नर्सों को सफेद व हल्के रंग के सादे कपड़ों में देखा होगा। इस तरह की पोशाक से पहनने वाला साफ सुथरा लगता है, और मरीज पर भी ऐसे वस्त्रों से शांतिपूर्ण प्रभाव पड़ता है। एक सिपाही की वर्दी कैसी होती है?

कई व्यवसायों में एक विशिष्ट वर्दी अपनाई जाती है जो उन्हें एक अलग पहचान देती

है। उदाहरण के लिये वायुसेना, यातायात पुलिस, सुरक्षा गार्ड व होटल उद्योग में काम करने वाले लोग। टेनिस के खिलाड़ी, एथलीट आदि छोटी निक्कर व कमीज़ पहनते हैं जो अत्यधिक नमी सोखने वाले वस्त्र से बने होते हैं। इस प्रकार के कपड़े यदि किसी अन्य अवसर पर पहने जायें तो अनुचित लगेंगे। इसी प्रकार एक तैराकी की पोशाक तरणताल के पास ही उचित लगेगी। कुछ क्लब, होटल और अक्सर कुछ औपचारिक पार्टियों की पोशाकों के अपने नियम होते हैं।

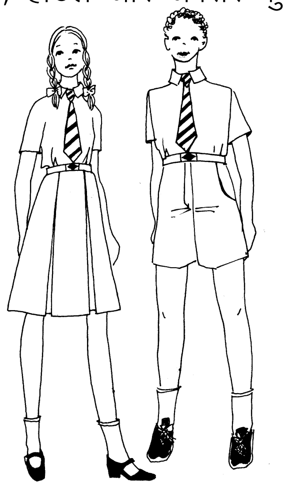
चित्र 26.7 व्यवसाय के अनुरूप वस्त्र

लम्बी बस यात्रा या रेलयात्रा के समय आपको कौन सी पोशाक पहननी चाहिये? यात्रा के कपड़ों को गहरे रंगों का व सिलवट रहित वस्त्र से बना होना चाहिये ताकि कपड़े मुसे नहीं।

कतिपय विशिष्ट क्रियाकलापों के लिये कुछ विशेष परिधान चाहिये। उदाहरण के लिये कीटनाशकों का छिड़काव करते समय, प्रयोगशाला में रसायनों को मिलाते समय या परमाणु संयंत्रों में काम करने वाले लोग विशेष प्रकार के ओवर ऑल का प्रयोग करते हैं। खदानों में मजदूर, खदानों की पोशाक व एक विशेष प्रकार की टॉर्च लगी हेल्मेट पहनते हैं। गोताखोरी की पोशाक में स्लिपर्स लगे होते हैं जो गोताखोरों को तैरने में मदद करते हैं। क्या आप जानते हैं कि अंतरिक्ष यात्रियों की पोशाक में जीवन रक्षक तंत्र लगा होता है ताकि बाहरी अंतरिक्ष के हानिकारक प्रभावों से उन की रक्षा हो सके। अग्निशमन दल के लोग अग्निरोधी वस्त्रों से बने कपड़े पहनते हैं। आपको रसोई घर में कार्य करते हुए कैसे वस्त्र पहनने चाहिये? रसोईघर में चुस्त सूती वस्त्र पहने जाने चाहिये। ढीले–ढाले वस्त्र और दुपट्टे व शॉल आदि रसोईघर के लिये उपयुक्त नहीं हैं।

पाठगत प्रश्न 26.2

(I) सही और गलत कथन छाँटिए। गलत कथन को सही कर के लिखिये।

(i) सिंथेटिक तन्तु नवजात शिशु के अंदर के वस्त्रों के लिये उचित है।

(ii) डाक्टर सफेद कोट आधुनिक दिखने के लिये पहनते हैं।

(iii) यात्रा के वस्त्र हल्के रंगों के होने चाहिये।

(iv) रेशमी वस्त्रों जैसे नाजुक कपड़े यात्रा में आराम देते हैं।

(v) आसानी से पहनाए जाने वाले सूती वस्त्र शिशुओं के लिए उचित रहते हैं।

(II) कॉलम 1 के कथनों को कालम 2 से मिलाइये।

कॉलम 1	कॉलम 2
(1) शिशुओं के लिये	(a) विविधता लिये हुये मिक्स एंड मैच कपड़े
(2) किशोर लड़के लड़कियों के कपड़े	(b) डेनिम
(3) फुर्तीले बच्चे	(c) अवशोषक सूती वस्त्रों से बने कपड़े
(4) पैन्ट	(d) मज़बूत व टिकाऊ वस्त्र से बने कपड़े
(5) दादी/नानी माँ	(e) आकर्षक कपड़े
	(f) चटकीले कपड़े
	(g) सामने बटन वाली पोशाक

26.6 गुणवत्ता

जब भी आप खरीदारी करने के लिये जाते हैं, आप दिखने में सुंदर, टिकाऊ और रखरखाव में सरल उत्पाद को ही खरीदना चाहते हैं। संक्षेप में आप एक गुणवत्ता वाला उत्पाद चाहते हैं। ऐसी कौन सी चीज़ है जो आपको सही चुनाव करने में सहायता करती है? वस्त्र पर लगी छपाई व लेबल ग्राहक की सहायता सामग्री हैं, जो आप को किसी उत्पाद की गुणवत्ता के विषय में जानकारी देती हैं। अतः आप उन्हें गुणवत्ता के संकेतक कह सकते हैं।

26.3.1 लेबल व छपाई (Marking)

लेबल कागज़ या प्लास्टिक का एक टुकड़ा है जो किसी उत्पाद पर उसकी जानकारी हेतु चिपकाया जाता है। लेबल आपको बताता है कि उत्पाद क्या है, उसे किसने बनाया है और उसे किस प्रकार प्रयोग करना है।

आज जो भी चीज़ हम खरीदते हैं उस पर लेबल लगा होता है। कोई भी 10 लेबल एकत्र करके उस पर लिखी जानकारी को पढ़िये। आप देखेंगे कि इन सब लेबलों पर कुछ लिखित जानकारी रहती है या कुछ चित्रण रहता है। लेबल कई प्रकार की सामग्रियों से बनते हैं जैसे कागज़, गत्ता, कपड़ा, टिन या कोई साधारण सा टैग आदि जो उस उत्पाद पर चिपका रहता है। पैकेट या डिब्बे में यह लेबल पैकेजिंग का हिस्सा हो सकते हैं।

लेबलों पर यह सूचना उत्पाद के नाम, चित्र, डिजायन, उत्पादन की तिथि, पैकिंग आदि के विषय में होती है। या फिर कोई अन्य कानूनी सूचना भी हो सकती है जो उत्पादक लेबल पर छापना चाहता हो।

टिप्पणी

थान पर लगे लेबल के विषय में आप क्या जानते हैं? प्रत्येक थान के प्रारंभ में आप कुछ छपाई देखते हैं। यह छपाई वस्त्र की सतह पर कुछ सूचना देने के लिये या पहचान करने के लिये होती है।

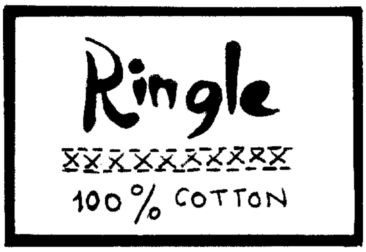

चित्र 26.8 ब्रान्ड लेबल

जहाँ तक उपभोक्ता सामग्री का प्रश्न है, हम किसी प्रतीक, चित्र या नाम आदि को देखते हैं जिससे हम उस उत्पाद को पहचानते हैं। उदाहरण के लिये बॉम्बेडाइंग या डी.सी.एम के उत्पाद। ये **ब्रान्ड लेबल** होते हैं। कुछ **विवराणात्मक लेबल** होते हैं, जो पैकेट में रखे सामान के गुण जैसे आकार और किस्म के विषय में बताते हैं। इसके अतिरिक्त **सर्टिफिकेशन लेबल** होते हैं जो उत्पादक के अतिरिक्त किसी अन्य एजेंसी की स्वीकृति होती है कि अमुक उत्पादक किन्हीं स्वीकृत मानकों के अनुसार ही बना है। उदाहरण के लिये वूलमार्क शुद्ध ऊनी वस्त्रों के लिये प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा देख–रेख वाले लेबल भी होते हैं जो उत्पाद की धुलाई, इस्तिरी, भण्डारण आदि के विषय में जानकारी देते हैं।

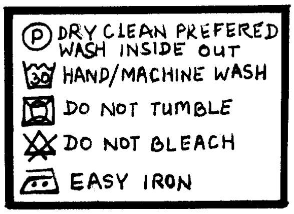

चित्र 26.9: देख-रेख वाले लेबल

एक अन्य प्रकार के लेबल **सूचनात्मक लेबल** कहलाते हैं। ये लेबल ग्राहकों को उत्पाद की संरचना के विषय में उस उत्पाद से क्या अपेक्षाएं रखनी चाहिये, वह कैसे कार्य करेगा, उसकी देखभाल किस प्रकार करनी है, और किस कार्य के लिये इसका उपयोग होगा, आदि बातों से अवगत करवाता है। अतः अधिक प्रभावशाली होने के लिये एक लेबल पर ग्राहक के लिये समुचित सूचना होनी चाहिये। यद्यपि इस बात को गंभीरता से नहीं लिया जाता है, जो कुछ भी छपाई में बताया जाता है वह बहुधा अर्थहीन होता है। उदाहरण के लिये लिज़ी–बिज़ी जैसा नाम कपड़े के विषय में कोई भी अर्थपूर्ण सूचना नहीं देता।

क्रियाकलाप 26.1 आपने 10 लेबलों के नमूने एकत्र कर लिये होंगे। उनको ध्यानपूर्वक देखिये, और निम्न टेबल को भरिये। आपकी सुविधा के लिये एक टेबल भर दी गयी है।

क्र0 सं0	लेबल	सूचना	लेबल का स्थान
(1)	XL	नाप : सबसे बड़ा साइज़	गले के पिछले हिस्से में सिला हुआ।
(2)	–	–	–

26.4 धांधलियां (Malpractices)

आपने व्यापारियों, खाद्य सामग्री के विक्रेताओं या बिजली का समान बेचने वालों द्वारा की जाने वाली अनेक प्रकार की धांधलियों के विषय में सुना होगा। अतः यह आवश्यक है कि हमें इसकी जानकारी हो ताकि इन धांधलियों पर नियन्त्रण रखने के लिये कुछ उपाय किये जा सकें। इस क्षेत्र की कुछ आम धांधलियां इस प्रकार हैं–

(a) कम मात्रा में उत्पाद बेचना या खराब माल बेचना

सूट के लिये खरीदा गया 4 मीटर कपड़ा अक्सर 3.50 मीटर ही निकलता है। जो भी खुदरा व्यापारी ऐसा करता है वह या तो नाप से छोटा फीता प्रयोग करता है या फिर कपड़े को नापते समय खींचता है।

(b) उत्पाद के मूल्य में धोखाधड़ी

व्यापारी बहुधा उत्पाद पर या पैकेट पर अंकित मूल्य से अधिक मूल्य लेते हैं। वे किसी टैक्स का नाम लेकर लेबल पर लगे मूल्य में इसे जोड़ देते हैं। वे लेबल पर लगे किसी शब्द जैसे सिल्क फिनिश को ले लेते हैं और इसके लिये अतिरिक्त मूल्य यह कह कर लेते हैं कि इस कपड़े पर सिल्क फिनिश की गयी है अतः इस कपड़े का मूल्य अधिक है।

(c) दोषपूर्ण उत्पाद बेचना

कई स्थानों पर व्यापारी कुछ दोषपूर्ण उत्पादों को भी 'नया' कहकर बेचते हैं और मूल्य भी नये उत्पाद का ही लेते हैं।

(d) लेबल पर गलत सूचना जैसे भ्रामक, झूठी तथा अधूरी जानकारी देना

पर्दों के वस्त्र पर छपाई में यह सूचना होनी चाहिए कि धूप का उसके रंग पर असर पड़ेगा या नहीं। यदि ऐसा नहीं लिखा है तब सूचना अधूरी है। इसी प्रकार जो शब्द प्रयोग किये जायें उन्हें अर्थपूर्ण होना चाहिये, भ्रामक नहीं। दी गयी सूचना सही होनी चाहिये। कपड़ों के लेबल पर दी गयी सूचना बहुधा अधूरी व भ्रामक होती है। उदाहरण के लिये एक रेडिमेड परिधान पर लगे लेबल पर उसकी धुलाई, इस्त्री व उसके संग्रह के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं होती।

अतः एक ग्राहक के रूप में हमारे लिये यह जरूरी हो जाता है कि हम सावधान रहें और उत्पादक को धांधली करने का मौका न दें। यदि कभी शिकायत करने की आवश्यकता पड़े तो अधिकृत व्यक्ति को इसके विषय में अवश्य अवगत करायें। ग्राहक सुरक्षा अधिनियम के अनुसार ऊपर दी गयी धांधलियों की शिकायत होने पर ग्राहक को पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जाती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 26.3

कोड पहचानिए!

आप एक जागरूक उपभोक्ता कैसे बन सकते हैं? नीचे दिए गए कोड को पहचान कर, एक जागरूक उपभोक्ता के गुण लिखिए।

अ = 1	ते = 9	ब = 17	म = 25	ले = 33
उ = 2	त्या = 10	ढ़ें = 18	मू = 26	व = 34
ई = 3	छ = 11	ण = 19	य = 27	स = 35
क = 4	द = 12	प = 20	यो = 28	स्त्र = 36
की = 5	दे = 13	पा = 21	र = 29	सं = 37
क्ता = 6	धि = 14	प्र = 22	रें = 30	क्ष = 38
खें = 7	ना = 15	भो = 23	ल = 31	
ग = 8	नि = 16	म्बा = 24	ल्य = 32	

1. <u>2-10-12</u> <u>20-29</u> <u>11-21</u> <u>26-32</u> <u>13-7</u>
2. <u>15-20-9</u> <u>35-25-27</u> <u>34-36</u> <u>5</u> <u>31-24-3</u> <u>13-7</u>
3. <u>33-17-31</u> <u>20-29</u> <u>11-21-3</u> <u>20-18</u>
4. <u>2-20-23-6</u> <u>37-29-38-19</u> <u>1-14-16-27-25</u> <u>22-28-8</u> <u>4-30</u>

26.5 कपड़े की गुणवत्ता परखने के लिये निर्देश

आजकल बाजार में कपड़े की अनेकों किस्में मौजूद हैं। मानवनिर्मित रेशे, मिश्रित वस्त्र और प्राकृतिक रेशों की कई किस्मों ने वस्त्र उद्योग में क्रांति ला दी है। उदाहरण के लिये सूती रेशे के साथ लाइक्रा के मिश्रण से बनी पतलून काफी लोकप्रिय है। ये काफी आरामदायक व अच्छी फिटिंग वाली होती हैं। खादी, सूत व रेशम के साथ इसके मिश्रण युवा व वृद्ध, दोनों को भा रहे हैं। कई सिंथेटिक रेशों के मिश्रण भी अपने रखरखाव में आसानी के गुण के कारण काफी लोकप्रिय हो रहे हैं।

अब किसी विशेष प्रयोजन के लिये वस्त्र का चुनाव करना संभव हो गया है परंतु वे कौन से गुण हैं जो एक व्यक्ति वस्त्रों का चुनाव करते समय व खरीदारी करते समय देखता है?

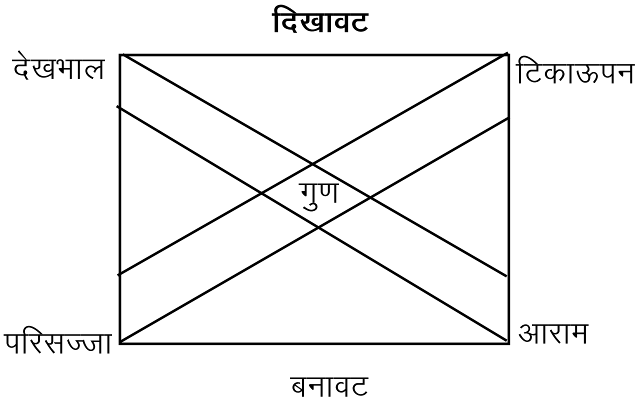

जब आप खरीदारी करने के लिये जाएं तब अच्छी खरीदारी करने के लिये निम्न मानदंडों को ध्यान में रखें–

कपड़ा

(1) कपड़ा स्पर्श करने में अच्छा है।

(2) वस्त्र का टिकाऊपन तन्तु के प्रकार व गुण पर, सूत की मज़बूती पर, सूत में दी गयी ऐंठन की मात्रा पर और वस्त्र की संरचना की सघनता पर निर्भर करता है। एक घनी बुनाई वाले वस्त्र में ढीली बुनाई वाले वस्त्र की अपेक्षा अधिक सूत होंगे। अतः वह अधिक टिकाऊ होगा।

बुनाई

(1) कपड़े की बुनाई में लम्बे धागे नहीं होने चाहिये क्योंकि वे खिंच जाते हैं।

(2) कपड़े की मज़बूती देखने के लिये दो अंगूठों के बीच में कपड़े को रखकर तनाव दीजिये। यदि कपड़ा ठीक से बुना हुआ है तब रेशों को एक दूसरे से छिटकना नहीं चाहिये।

(3) बाने के धागों को किनारी पर समकोण पर मिलना चाहिये। तिरछे कोण पर धागे होने का अर्थ है कपड़े में कान है।

(4) यदि आप वस्त्र को प्रकाश की ओर रख कर देखें तब कपड़े की बुनाई पूर्णतया समान होनी चाहिये न कि कहीं पतली व कहीं मोटी। असमान बुनाई वाला कपड़ा अधिक नहीं चलता। प्रकाश परीक्षण बुनाई के कमज़ोर हिस्सों और अन्य अनियमितताओं को भी उजागर कर देता है।

परिसज्जा

(1) कपड़े की सुगंध पर ध्यान दें। इसे शुद्ध होना चाहिये तैलीय नहीं।

(2) समान रंगाई देखने के लिये भी वस्त्र को प्रकाश की ओर देखें। यदि आपको

टिप्पणी

लगे कि क्रीज रेखा पर से रंग उड़ रहा है तब इसका अर्थ है रंगाई ठीक से नहीं हुई है।

(3) ज्यामितीय नमूने को सेल्वेज पर समकोण पर मिलना चाहिये क्योंकि कपड़ा सिलते समय अनियमित छपाई को मिलाना कठिन होता है।

(4) अंगुलियों के बीच कपड़े को रगड़े जाने पर पाउडर नहीं झड़ना चाहिये। इसका अर्थ है कि कपड़े पर अत्यधिक मॉंड किया गया है। वस्त्र उत्पादक सस्ते वस्त्र की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये अधिक मात्रा में स्टार्च या मांडी लगाते हैं। रेशमी वस्त्रों पर भी अत्याधिक गोंद की स्टार्च लगाई जाती है ताकि रेशमी वस्त्र का वज़न बढ़ाया जा सके, क्योंकि अधिक वज़न वाले रेशम का मूल्य भी अधिक होता है।

(5) वैल्वेट तौलिये आदि की खरीदारी करते समय कपड़े के उठे हुये रेशे या पाइल की जाँच करें कि वस्त्र का पाइल घना व अच्छा है। यह भी देखें कि बाने की ओर से कहीं कपड़ों की मज़बूती कम तो नहीं है।

26.6 तैयार परिधानों का चुनाव

आज़ के भागदौड़ वाले जीवन में कपड़े सिलवाने का समय निकाल पाना कठिन होता जा रहा है। आपको वस्त्र खरीदने के लिये बाज़ार जाना पड़ता है। दर्ज़ी का पता लगाना पड़ता है। और सिलाई का ऑर्डर देकर परिधान या ड्रेस के तैयार होने तक इंतजार करना पड़ता है। परंतु आपके पास रेडीमेड परिधान खरीदने का विकल्प मौजूद है।

ऐसे कई बाज़ार हैं जहाँ तैयार वस्त्र बहुत कम मूल्य पर बेचे जाते हैं। इन वस्त्रों की समस्या केवल यह है कि चूँकि ये वस्त्र हमारे नाप के अनुसार नहीं बनाये जाते अतः इनके साथ फिटिंग की दिक्कत होती है। अतः खरीदारी करते वक्त यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आपको तैयार वस्त्र किस प्रकार का चाहिये?

तैयार वस्त्र खरीदने के मानदंड

(1) **परिधान का डिज़ाइन** – किसी भी वस्त्र के डिज़ाइन के चार महत्त्वपूर्ण तत्त्व होते हैं। ये हैं कपड़े की आधारभूत बनावट, आकार, रंग और स्पर्श जब यह सब तत्त्व पूर्ण संरचना में रखे जाते हैं तब यह एक डिज़ायन बनाते हैं जिसमें संतुलन, अनुपात, बल, लय व संपूर्णता होती है। अपने चारों ओर लोगों द्वारा पहने

चित्र 26.11 परिधान का डिज़ाइन

गये वस्त्रों को देखिये कि ये वस्त्र क्यों अच्छे या बुरे लगते हैं। उन वस्त्रों में क्या आप डिज़ायन के चार तत्त्वों को देख पाते हैं?

(2) **फिट** – जब आप एक परिधान का चुनाव उसके बाह्य गुण जैसे दिखावट के आधार पर कर लेते हें तब आपको उसका आकार व फिट देखना होता है। फिट के लिये हमें परिधान के तीरे, छाती, कमर व लम्बाई को देखना चाहिए। आपके परिधान को आपकी आकृति की सुंदरता को बढ़ाने वाला होना चाहिये। इसको आपके आकार से बड़ा या छोटा नहीं होना चाहिये। जिस भी व्यक्ति के लिये परिधान खरीदना हो, उसका ठीक से नाप लेकर उसी के अनुसार परिधान खरीदिये।

(3) **कारीगरी** – कारीगरी का अर्थ है वस्त्र को बनाने में प्रयुक्त संरचनात्मक बारीकियां। अतः परिधान की उल्टी तरफ देखिये। सिलाई का एक कोना खींचकर देखिये कि सिलाई पक्की है या नहीं। परिधान की सभी सिलाइयां दोहरी होनी चाहिये, सिलाई सिरों पर खुली न हो, सिलाई के बीच में कहीं पर भी खिंचाव न हो। खुले स्थानों व मोड़ों पर ज़िप की अच्छी तरह से जाँच कर लें। दबाव के लिए पर्याप्त कपड़ा हो ताकि जरूरत पड़ने पर वस्त्र की सिलाई उधेड़ कर नयी सिलाई लगाई जा सके। कॉलर के कोने सफाई से सिले होने चाहिये। परिधान पर पाइपिंग व पट्टियां ठीक प्रकार से लगी होनी चाहिये।

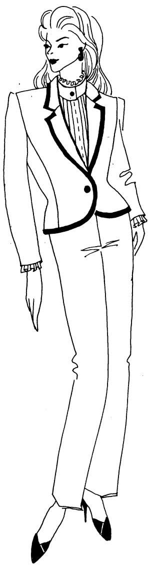

चित्र 26.12 : परिधान की फिटिंग व कारीगरी

(4) **मूल्य** – वस्त्र की गुणवत्ता, संरचनात्मक बारीकियां व कढ़ाई आदि निश्चित रूप से परिधान के मूल्य को प्रभावित करते हैं। सामान्यतया हम समझते हैं कि अधिक मूल्य के परिधानों की गुणवत्ता अच्छी ही होगी। परंतु यह हमेशा सत्य नहीं होता। अतः यह देखना आवश्यक हो जाता है कि वसूला गया मूल्य कपड़े की गुणवत्ता के अनुसार है भी या नहीं।

(5) **देखरेख व रख रखाव** – बहुधा हम एक ड्रेस खरीदते हैं और पहली ही धुलाई के बाद हम देखते हैं कि पाइपिंग का रंग बाकी की ड्रेस पर भी लग गया है। या कई बार इस्त्री करते वक्त लेस जल गयी है, या फिर कई बार कच्चे रंग के सूती सूट को आपको ड्राइक्लीनिंग के लिये भेजना पड़ता है।

तैयार वस्त्रों के चतुराईपूर्ण चुनाव के लिये खरीदारी करते वक्त ड्रेस के रख रखाव के निर्देशों को भली भांति पढ़कर, मूल्य से इसका मिलान कर लें। ऐसा परिधान खरीदें जिसकी देखभाल आसानी से की जा सके।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 26.4

(I) दिये गये वक्तव्यों के लिये स्पष्टीकरण दें।

(i) एक घनी बुनाई वाला वस्त्र अधिक मज़बूत व टिकाऊ होता है।

क्योंकि ....

....

(ii) वस्त्र की बुनाई करते वक्त लम्बे धागों वाली बुनाई न करें।

क्योंकि ....

....

(iii) अंगुलियों से वस्त्र को रगड़े जाने पर पाउडर नहीं झड़ना चाहिये।

क्योंकि ....

....

(II) वस्त्रों व परिधानों का चुनाव निम्न के आधार पर करते हुये आप कौन से दो बिंदुओं पर ध्यान देंगे।

(अ) (i) बुनाई के आधार पर (1)..
(2)..

(ii) परिसज्ज़ा के आधार पर (1)..
(2)..

(iii) कारीगरी के आधार पर (1)..
(2)..

(iv) रखरखाव व देखभाल के आधार पर
(1)..
(2)..

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

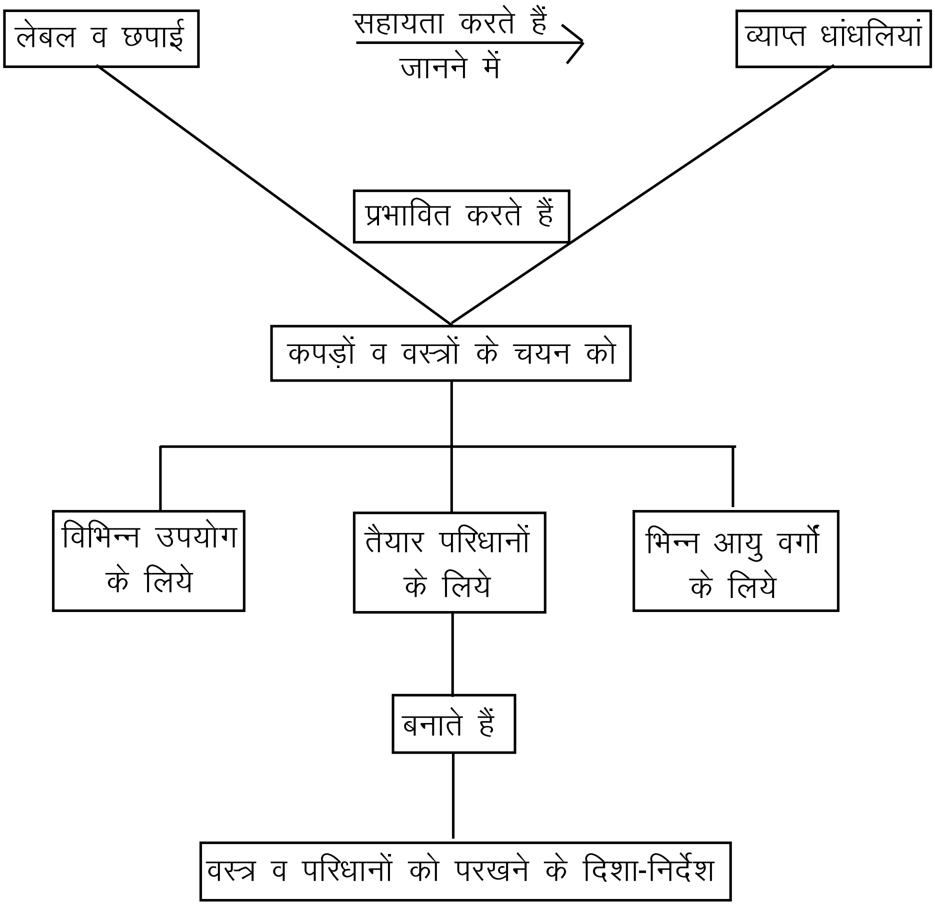

पाठान्त प्रश्न

1. लेबल व छपाई में क्या अन्तर है?
2. वस्त्र बेचने से संबधित कौन कौन सी धांधलियां हैं?
3. दस छपाई के नमूने एकत्र करिये और सूचना देने वाले लेबल के विषय में लिखिये।
4. पर्दे के लिये कपड़ा खरीदते समय आप किन किन बातों का ख्याल रखेंगे?
5. अपने लिये रेडिमेड सूट खरीदते समय आप क्या ध्यान रखेंगे?
6. आपकी कॉलेज जाने वाली बहन के लिये कौन सा वस्त्र व परिधान सबसे उपयुक्त रहेंगे और क्यों?

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1 1. (i) (a) (ii) (b) (iii) (d) (iv) (b) (v) (b)

2. (1) सूत (2) नायलॉन (3) ऊन

3. (1) सूत–क्योंकि भीगने पर यह मज़बूत हो जाता है।

(2) नायलॉन – अपनी मज़बूती के कारण।

(3) ऊन – क्योंकि यह ताप का कुचालक है।

26.2 (I) (1) असत्य – सिंथेटिक कपड़े नमी के अच्छे अवशोषक नहीं होते। अतः बच्चों के वस्त्रों के लिये यह आरामदायक नहीं होते।

(2) असत्य – डॉक्टरों को स्वच्छ, साफ व कुशल दिखना चाहिये। उन्हें स्वयं को संक्रमण से बचाना चाहिये, इसी कारण वह सफेद कोट पहनते हैं।

(3) असत्य – यात्रा के दौरान कपड़े अत्यधिक मैले हो जाते हैं। अतः यात्रा के लिये हल्के रंग के वस्त्र नहीं पहनने चाहिये।

(4) असत्य – लम्बी यात्रा के दौरान मज़बूत व टिकाऊ कपड़े पहनने चाहिये। केवल मज़बूत कपड़े ही यात्रा की टूट–फूट आसानी से सह सकते हैं।

(5) सत्य – क्योंकि बच्चा अधिकांशतः लेटा ही रहता है। अतः ऐसे वस्त्र पहनाने में आसान होते हैं और नवजात शिशु की कोमल त्वचा के लिये भी मुलायम रहते हैं।

(II) (i) (c) (ii) (a) (e) (iii) (d) (f) (iv) (b) (v) (g)

26.3 (1) उत्पाद पर छपा मूल्य देखें।

(2) नापते समय वस्त्र की लम्बाई देखें।

(3) लेबल पर छपाई पढ़ें।

(4) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम प्रयोग करें।

26.4 (I) (1) पाठ 26.5 को पढ़िये।

(2) पाठ 26.5 को पढ़िये।

(3) पाठ 26.5 को पढ़िये।

(II) (अ) पाठ 26.6 को पढ़िये।

(ब) पाठ 26.6 को पढ़िये।